A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

सामवेद की गान-विद्या में अंतर्निहित आध्यात्मिक चेतना एवं शैक्षिक संभावनाओं का एक समग्र विश्लेषण

Dr. Sugandha Jain
Assistant Professor, Faculty of Education, Tirthankar Mahaveer University, Moradabad U.P.

सार

यह शोध-पत्र भारतीय संगीत की उस प्राचीनतम धारा की ओर इंगितकरताहै, जिसकी जड़ें स्वयं वेदों में विद्यमान हैं। चारों वेदों में सामवेद को गान का मूल माना गया है। जबकि संगीत की दृष्टि से ऋग्वेद संगीतका प्राचीनतम स्रोत है।सामको गीत और संगीत का वेद कहा गयाहै।सामवेद न केवल संगीत का पितामह है, अपितु वह ब्रह्मांडीय स्वरूप को स्पर्शकरनेवाला एक ऐसा आध्यात्मिक माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं को ब्रह्म सेसंपृक्तकरसकता है। सृष्टि के कण-कणमें संगीत विद्यमान है, पत्तों की मर्मर ध्वनिमें, हवा के प्रवाह में, उदधि की उर्मियों में, कलियों के चटकनेमें, पक्षियों के कलरव में, गाय के रंभाने मेंसभीमें संगीत की गूंज निहितहै। हर वस्तु या जीव का संगीत अलग प्रकार का है; लेकिन यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि, हर वस्तु या जीव में संगीत का मर्मसमाहितहै। सामवेद की ऋचाएं केवल मंत्र न होकर स्वरबद्ध गान की परंपरा का प्रारंभ हैं। सामस्वरों के माध्यम से उत्पन्न संगीत, मन के सूक्ष्मतम भावों को जाग्रत करता है। यह गान-विद्या केवल श्रवण सुख तक सीमित नहीं, अपितु यह आत्मा के शुद्धिकरण और चेतना के विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।या यूं कहेंकि, संगीत है तभी हम अपने विचारों और भावों को उसकी करुणता के साथ अभिव्यक्त करने में सक्षम हो सकतेहैं। यह ऐसी सार्वभौम भाषा है जिसे सब समझ सकतेहैं। संगीत की महत्ता को प्रदर्शित करते हुए पं. शारंगदेव ने अपने ग्रंथ संगीत-रत्नाकर में कहा है, "शाश्वताय चधर्माय"- अर्थात "संगीत इस प्रकृति में शाश्वत है, संगीत की आवश्यकता धर्म के लिए है, कीर्ति के लिए है, संगीत के बिना मोक्ष की प्राप्ति भी संभव नहीं"।सामवेद में संकलित ऋचाएं इस मधुरतम भाव का प्रतीक हैं। सामवेद में गान के विविध स्वरूपों, पद्धतियों और ऋतु-संयोगों का वर्णन मिलता है, जो यह दर्शाते हैं कि संगीत का प्रयोग केवल कलात्मक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उन्नयन और यज्ञीय विधानों में भी अनिवार्य रहा है। ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद—तीनों में संगीत, वाद्य और नृत्य का समन्वय स्पष्ट दिखाई देता है। यह शोधआलेख इस तथ्य को भी उद्घाटित करता है कि, सामवेद की गान परंपरा वर्तमान शैक्षिक परिवेश में भी कितनी उपयोगी हो सकती है। विद्यार्थियों में संगीत के माध्यम से आत्म-अनुशासन, एकाग्रता, संस्कार और भावबोध का विकास किया जा सकता है। इस दृष्टि से सामवेद न केवल अतीत की धरोहर है, अपितु वह वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक सशक्त शिक्षण-स्रोत है।

***मुख्य शब्द**: सामवेद,भारतीय संगीत, वेद गान परंपरा, स्वर, लय, ताल, गान-विद्या,आध्यात्मिकधारा, ऋचाएं।*

परिचय

भारतीय वैदिक वाङ्मय मेंसामवेदको एक विशेष और विशिष्ट स्थान प्राप्त है। यह वैदिक संहिताओं में तृतीय स्थान पर स्थित है, परंतु इसका महत्त्व केवल अनुक्रमण में ही नहीं, बल्कि उसकी आंतरिक गेयात्मकता, आध्यात्मिक उन्नयन और कलात्मक भावभूमि मेंभी निहित है।सामवेदकोउपासना का वेदकहा जाता है, क्योंकि इसकी ऋचाएँ विशेष रूप सेसामगानहेतु प्रयुक्त होती हैं,जो आध्यात्मिक उन्नयन और देवता को आकृष्ट करने की प्रभावी विधा मानी जाती है।बृहद्देवतामें स्पष्ट उल्लेख है कि,"जो सामवेद को जानता है, वही वेद के रहस्य को जानता है।" यह उद्घोष स्वयं सामवेद के महत्व को प्रतिष्ठित करता है।

वेदों की ऋचाओं को जब सामवेद का उद्गाता अलग-अलग रीतियों से,पद्धतियों से जब शुद्ध स्वर और लय में पिरोकर गीत की शक्ति प्रदान करता था, तो उसकी व्यापकता का क्षेत्र असीम हो जाताथा। चारों ओर आनंद प्रवाहित होने लगता था और इस आनंद का कारक वैदिक ऋचाओं में व्याप्त आध्यात्मिक ऊर्जा शक्ति थी, आजभीयदि उस अनंत आनंद की खोज करनी है, तो संगीत के माध्यम से वैदिक शिक्षाओं कीओर,वेदोंकीओर, सामवेद कि ओर लौटना होगा।वास्तविकता यह है कि, आज भी यदि सच्चा उद्गाता ऋचाओं का गान अपने हृदय की गहराइयों से करता है तो समस्त देवी-देवताओं को आकर्षित कर लेता है। यही कारण है कि यज्ञों में सामवेद का गान अनिवार्य माना गया है। सामवेद भारतीय संगीत की प्राचीनतम स्रोत-संहिता है, जिसका स्वरूप हमें संगीत के आदिकालीन आयामों की झलक देता है।जैमिनीय सूत्रके अनुसार – "गीतिषु सामाख्या", अर्थात्जो मंत्र गाए जाते हैं, वही साम कहलाते हैं।इस परंपरा में ऋग्वैदिक ऋचाओं को स्वरबद्ध कर साम के रूप में

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

विकसित किया गयाहै। गान के लिए साहित्य की आवश्यकता सदा सेरही है, और वैदिक ऋचाएँ – विशेषतः छन्दोबद्ध मंत्र – इस हेतु अत्यंत उपयुक्त सिद्ध हुए।

यह उल्लेखनीय है कि सामवेद न केवल धार्मिक अनुष्ठानों का साधन था, अपितुभारतीय संगीत, काव्य, कला और भक्तिका भी आधार बना। ऋग्वेद को वाणी मानने पर सामवेद उसकी प्राणशक्ति प्रतीत होता है। इसका प्रधान अंगस्वरहै,जो अध्यात्म और ऊर्जा का स्रोत माना गया है।छांदोग्य उपनिषद्के अनुसार – "सा + अम्"के संवाद से ही विश्व में संगीत प्रवाहित हुआ है। यदि "सा" ऋक् है, तो "अम्" आलाप अर्थात साम है।

सामवेद की संगीतपरक सत्ता को अनेक आचार्यों और विद्वानों ने स्वीकार किया है।भरतमुनिने अपनेनाट्यशास्त्रमें लिखा –

"जग्राह पाठ्यम् ऋग्वेदाद् सामभ्यो गीतमेव च।

यजुर्वेदाद अभिनयान् रसान् आथर्वणादपि।।"

अर्थात् उन्होंने ऋग्वेद से पाठ, सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस को ग्रहण किया। इसी को आगे बढ़ाते हुएपं. शारंगदेवनेसंगीत रत्नाकरमें पुनः लिखा –

"सामवेदादिंद गीत संजग्राह पितामहः"।

इन दोनों दृष्टांतों से स्पष्ट है कि भारतीय संगीत की उत्पत्ति का स्रोत सामवेद ही रहा है। सामवेद की प्रतिष्ठा केवल भारत की सांस्कृतिक परंपरा तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसे ईश्वर का अंश भी माना गया है।भगवद्गीतामें श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं – "वेदानां सामवेदोऽस्मि", अर्थात्मैं वेदों में सामवेद हूँ।मनुस्मृतिमें आचार्य मनु सामवेद का संबंधसूर्यसे जोड़ते हैं, जो संपूर्ण सृष्टि को प्रभावित करने वाला दिव्य तत्त्व है – जैसे सूर्य को सब स्वयं नमन करते हैं, वैसे ही सामवेद को भी स्वाभाविक श्रद्धा प्राप्त है।

आधुनिक विद्वानों ने भी सामवेद की महत्वता को अत्यंत आदरपूर्वक स्वीकार किया है।रतनजनकर जीके अनुसार – साम का अर्थ ही गायन है। उनका मानना है कि भारत में वेदों की उच्चारण पद्धति से ही संगीत का विशिष्ट रूप विकसित हुआ।प्रो. सुमति मुटाटकर के अनुसार –

"Indian musical tradition goes as far back as the Vedic period. According to this, music was first created from Samveda by Brahma himself and performed by Bharat in the presence of Mahadev. The music was leading to salvation, Narad and Bharat were two promethorises who brought this heavenly fire down to the earth to warm the human heart."

यह कथन सामवेद की संगीतात्मकता और उसकी आध्यात्मिक ऊष्मा को वैश्विक स्तर पर प्रकट करता है। उपनिषदों में यह विश्वास है कि सम्पूर्ण जगत ब्रह्म का मधुर साम है। अतःसामवेदको केवल गेय मंत्रों की संहिता नहीं, बल्कि एकआध्यात्मिक नादशक्तिऔरशैक्षिक अनुशासनके रूप में भी देखा जा सकता है। सामवेद की गान-विद्या में अंतर्निहितआध्यात्मिक चेतनातथा उसमें समाहितशैक्षिक संभावनाओंका समग्र विश्लेषण करेंतोप्रतीतहोताहैकि, ब्रह्मकीअद्वितीयगूंजगानहै, जिसेअनहद्नादभीकहागयाहैऔरनाद्स्फोटहै, अक्षरहै, शाश्वतहै, परामान्नदकाकारकहै।यही कारण है कि, आधुनिक विज्ञान भी संगीत को समस्त तनाव से मुक्ति का कारक कहता है और उसका मानना है कि, संगीत पत्थर को भी पिघलाने की शक्ति धारण करताहै, संगीत बालक को नैतिक, चारित्रिक, धार्मिक और आध्यात्मिक बनाने की क्षमता धारण करता है।शैक्षिक दृष्टि से भी संगीत मानव जीवन को सभ्य और सुसंस्कृत करने की विशिष्ट ऊर्जा से सन्निहित है।अतःवैदिक कालीन इस संगीतात्मक परंपरा का आधुनिक शिक्षा, विशेषकर बाल्यकालीन एवं मानवीय विकास संदर्भों में पुनर्पाठ किया जायेतोअद्भुतपरिणामदेखेजासकते है। इसलियेहीविद्वानोंकामाननाहैकि, गान-परंपरा न केवल अध्यात्म का मार्ग प्रशस्त करती है, अपितु मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक उन्नयन का भी आधार बन सकती है।

सामगान में अंतर्निहित आध्यात्मिक चेतना का प्राकट्य

सामवेद का स्वरूप अन्य तीनों वेदों की तुलना में अत्यंत विशिष्ट है, क्योंकि इसमें ऋचाओं का प्रयोग स्वरबद्ध गान के रूप में होता है। यह गान केवल शारीरिक श्रवण की संतुष्टि नहीं देता, वरन् यह आत्मा की गहराइयों को स्पर्श करता है और साधक के भीतर स्थित दिव्यता को जागृत करता है। यह अनुभव लौकिक नहीं, अपितु पारलौकिक होता है, जहाँ साधक स्वयं को देवत्व के समीप अनुभव करता है। सामगान की यह आध्यात्मिक

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

प्रकृति यज्ञीय प्रक्रिया के बाह्य अनुष्ठान से कहीं अधिक एक आंतरिक साधना है, जिसमें नाद के माध्यम से आत्मा ब्रह्म से तादात्म्य स्थापित करती है।

गान के चार मुख्य प्रकार—ग्रामगेयगान, आरण्यकगान, ऊहगान और ऊहह्यगान—इस सत्य की पुष्टि करते हैं कि साम केवल स्वर नहीं, अपितु वह एक आध्यात्मिक अभ्यास है, जो न केवल देवताओं को समर्पित है, बल्कि साधक की आंतरिक चेतना के विस्तार का माध्यम भी है। विशेष रूप से मूल सामगान की परंपरा में परिवर्तन की मनाही, उसके स्थायित्व, शुद्धता और आध्यात्मिक गरिमा की पुष्टि करता है। यह संगीत की वह 'बंदिश' है, जो कालातीत है और जिसे स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह स्वयं परम सत्य का साक्षात्कार है। यही कारण है कि उसे अपौरुषेय भी माना जाता है—जो मनुष्यकृत नहीं, वरन् दिव्य है।

गान के अभ्यास से पहले आर्चिक ग्रंथों का अध्ययन अनिवार्य होता था, जिससे ऋचाएँ कंठस्थ हो जाती थीं और उनके भावार्थ साधक के अंतर्मन में स्थिर हो जाते थे। इन ऋचाओं में स्थित नाद, छंद, लय और भाव की समरसता ही सामगान की आत्मा है। जब इन्हें ऊह और ऊह्य रूपों में रूपांतरित किया जाता था, तो वह केवल बाह्य रचनात्मकता नहीं, अपितु अंतर्यात्रा की अनुभूति का बिम्ब बनती थी। यह प्रक्रिया आधुनिक संगीतशास्त्र की उस विधि से मिलती-जुलती है, जहाँ पहले विद्यार्थी मूल राग-रूपों को आत्मसात करता है और फिर उनके आधार पर स्वतंत्रता प्राप्त करता है। इस प्रकार सामगान किसी व्यक्तिगत भावनात्मक उद्गार का नहीं, वरन् सार्वभौमिक चेतना के प्रकटीकरण का माध्यम बन जाता है।

वैदिक यज्ञों से स्वतंत्र होकर सामगान की आत्मिक धारा

सामवेद प्रारंभ में यज्ञों के अनुष्ठानों में देवताओं को प्रसन्न करने का सशक्त माध्यम था। यज्ञों के उत्कर्ष काल में इन सामगानों का प्रयोग अत्यधिक रूप से होता था, जिससे देवता तृप्त होते और फलस्वरूप लौकिक सुखों की प्राप्ति होती थी। किंतु जैसे-जैसे यज्ञों का स्वरूप जटिल और कठोर होता गया, साधकों की चेतना इस बात की ओर मुड़ी कि क्या केवल बाह्य यज्ञ द्वारा ही आध्यात्मिक उन्नयन संभव है? इस परिवर्तनशील प्रवृत्ति के कारण यज्ञीय विधियों से इतर सामगान को आत्मिक अनुशासन और साधना के रूप में स्वीकार किया जाने लगा।

रामायणकालीन उदाहरण इस बात को पुष्ट करते हैं कि यज्ञ-विहीन कर्मों द्वारा भी यज्ञफल की प्राप्ति संभव मानी गई। ब्राह्मणग्रंथों में भी यह प्रवृत्ति दिखाई देती है, जहाँ केवल सामगान के माध्यम से यज्ञफल प्राप्त करने की धारणा स्थापित हुई। यह धारणा न केवल बाह्य क्रिया-कांड से विमुक्त करती है, अपितु आंतरिक भाव-संवेदन की महत्ता को स्वीकार करती है। इस प्रकार सामगान केवल देवताओं की कृपा प्राप्ति का साधन न रहकर आत्मा की निर्मलता, शुद्धता और शांति की खोज बन जाता है। सामवेदियों की परंपरा में यह भी स्पष्ट होता है कि सामगान का स्वाध्याय एक नित्यकर्म था—अर्थात् दैनिक अनुशासन। इस गान का अभ्यास केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं था, बल्कि साधक के जीवन की दैनिक तपश्चर्या थी। अन्त्येष्टि जैसे अवसरों पर भारुंड साम का प्रयोग, यह संकेत देता है कि सामों का प्रयोग जीवन के प्रत्येक चरण—जन्म, कर्म, मृत्यु—तक व्याप्त था। ऋग्वेद के यमसूक्त में भी इसका उल्लेख मिलता है। यहाँ सामगान मृत्यु के भय को शांति में परिवर्तित करता है, वह शोक को साधना में ढालता है और आत्मा को ब्रह्म के आलोक की ओर ले जाता है। यह आध्यात्मिकता का वह रूप है जो वैदिक युग से लेकर वर्तमान समय तक नाद के माध्यम से जीवित रहा है।

सामगान में 'नाद' के माध्यम से आध्यात्मिक उपचार और चेतना का संवर्धन

सामवेद की गान-परंपरा केवल उपासना या आत्मानुशासन का माध्यम नहीं रही, वरन् वह आध्यात्मिक चिकित्सा का भी एक प्रभावशाली उपकरण रही है। सामों का स्वर, लय, गति और नादविधान न केवल मनोवैज्ञानिक उपचार प्रदान करता है, अपितु आत्मा की अशुद्धियों को शुद्ध कर उसकी आभ्यंतर संरचना को दिव्यता से आलोकित करता है। सामों के स्वरों में कम्पनात्मक ऊर्जा होती है जो शरीर के सूक्ष्म केंद्रों (नाड़ी-मंडलों) को प्रभावित करती है। इस प्रक्रिया में साम गायक और श्रोता दोनों एक प्रकार की भावावस्था में प्रवेश करते हैं, जहाँ ध्यान, नाद, और मंत्र एक होकर चेतना की उच्चतर अवस्था को संभव बनाते हैं।

सामवेद में 'शान्तिक' और 'पौष्टिक' दोनों प्रकार के कर्मों के लिए विभिन्न सामों के विधान उपलब्ध हैं। उदाहरणस्वरूप, देवव्रत साम का बारंबार गायन कर अग्नि में आहुति देने से कल्याण की प्राप्ति मानी गई है। इसी प्रकार नगर की सुरक्षा के लिए द्रवव्रत साम, रात्रि में कल्याण हेतु 'एषो उषा अपूर्व्या' साम और प्रातः सुख के लिए 'यदघ कच्च' साम के प्रयोग का निर्देश है। रोगों के निवारण हेतु 'विश्वा पूतनाः', 'शन्नो देवी' और 'अवोदस' जैसे सामों के गायन का विधान है। इन सबका उद्देश्य मात्र शारीरिक स्वास्थ्य नहीं, वरन् मानसिक शांति, आत्मिक स्थिरता और

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

ब्रह्मानुभूति की दिशा में व्यक्ति को प्रेरित करना है। यह परंपरा आधुनिक संगीत-चिकित्सा की अवधारणा से भी पूर्व की है, जहाँ ध्वनि को उपचार के रूप में प्रयोग किया जाता है। किंतु सामगान केवल 'ध्वनि-तत्त्व' नहीं, बल्कि 'नाद-ब्रह्म' की साधना है। नाद से उत्पन्न यह सामगान ब्रह्म की उस अभिव्यक्ति का रूप है, जो शब्दातीत है, किन्तु अनुभूति में प्रवेश करता है। यही कारण है कि साम को केवल संगीत न मानकर उपनिषदों में उसे 'उपासना' और 'स्वाध्याय' का नाम दिया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सामवेद में अंतर्निहित गान-विद्या केवल कलात्मक नहीं, बल्कि संपूर्ण आध्यात्मिक चिकित्सा, आत्मिक शुद्धि और ब्रह्मिक चेतना का साधन है।

सामवेद में संगीत की आध्यात्मिक धारा और उसकी शैक्षिक पुनर्व्याख्या

सामवेद का स्वरुप केवल संगीतमय पाठ का माध्यम न होकर एक गहन आत्मानुभूति की प्रक्रिया भी है। यहाँ 'स्वर' केवल श्रव्य तत्व नहीं, अपितु एक साधना है, जो साधक के अंतरतम में उतरकर उसे ब्रह्म से एकात्म कर देता है। इस प्रक्रिया में श्रोता और गायक दोनों का ही आध्यात्मिक स्तर पर उत्कर्ष होता है। इसीलिए वैदिक काल में सामगान को केवल धार्मिक अनुष्ठानों में प्रयुक्त न कर, बल्कि आत्मिक शुद्धि और भावात्मक उन्नयन के साधन के रूप में देखा गया।

स्वर और आत्मानुभूति का संबंधस्वर की उत्तारता, दीर्घता और सघनता में आत्मा की तरंगों की लयबद्धता छिपी होती है। सामवेद के अनुसार, यह स्वर 'ओंकार' से उत्पन्न होकर सम्पूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त 'नाद' का मूर्त रूप है।जैसा किछांदोग्य उपनिषदमें उल्लेख है –"समा वेद्यो यज्ञानां।"अर्थात साम ही यज्ञों का वेद्य तत्व है। यहाँ 'साम' को केवल गान नहीं, बल्किब्रह्मसत्ता तक पहुँचने का माध्यमकहा गया है। शैक्षिक दृष्टिकोण से स्वर-साधना का महत्वशिक्षा में यदि केवल सूचना न देकर संवेदना विकसित करनी हो, तो वैदिक गान की प्रक्रिया एक श्रेष्ठ साधन बन सकती है। सामगान की प्रणाली बालक में श्रवण शक्ति, धैर्य, स्मृति-शक्ति औरआत्मानुशासन का विकास करती है। स्वर-साधना एकाग्रता को सुदृढ़ करती है और ध्यानावस्था में लाने का कार्य करती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जहाँ ध्यान-आधारित शिक्षण विधियों की आवश्यकता महसूस की जा रही है, वहाँ वैदिक स्वर-साधना अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकती है।

आध्यात्मिक चेतना और समन्वय का विकाससामगान की पद्धति में स्वर-ताल-लय का समन्वय आत्मा के भीतर समरसता उत्पन्न करता है। यह समरसता'ऋत'की स्थापना करती है, जो वैदिक दर्शन का केंद्रीय तत्व है। इस प्रकार संगीत केवल अभिव्यक्ति नहीं बल्कि"ऋत में प्रतिष्ठित होने की साधना"बन जाती है। सांस्कृतिक और मूल्यपरक शिक्षा में योगदानसामवेद की स्वर-साधना, संस्कृति की मौलिक जड़ों से जुड़ने का अवसर देती है। जब विद्यार्थी इस वैदिक संगीत प्रक्रिया में संलग्न होते हैं, तो उनके भीतरकर्तव्य, निष्ठा, अनुशासनऔरआत्मिक शुद्धताजैसे गुणों का प्रस्फुटन होता है। यह संगीत उन्हें केवल गायक नहीं बनाता, सज्जन और संवेदनशील नागरिकबनाता है।

समग्र शैक्षिक विश्लेषण : सामवैदिक गान-विद्या की संरचना में अंतर्निहित शिक्षाशास्त्रीय तत्त्व

सामवेद की गान-विद्या न केवल आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने का एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है, अपितु यह वैदिक शिक्षा-पद्धति का एक उत्कृष्ट प्रतिमान भी है। वैदिक कालीन सामगायक जिस प्रकार स्वरों का प्रयोग करते थे—जैसे क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र तथा अतिस्वार—वह न केवल एक संगीत-शास्त्रीय अनुशासन को दर्शाता है, बल्कि उसमें गहनशिक्षाशास्त्रीय उपादानभी निहित हैं, जो आज के शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

सामगान के माध्यम से विद्यार्थियों को उच्चारण, स्वर-संयम, श्रवण कौशल एवं ध्वनि-संवेदनशीलता जैसे गुणों का अभ्यास होता था। स्वर-चिह्नों की वैज्ञानिक योजना (जैसे 1–6 अंक संहिताओं में), वर्णों के ऊपर संकेतों का प्रयोग (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित) और विस्वरों का विभाजन एकव्याकरणिक अनुशासनको विकसित करता है। यह अनुशासन बालकों में तार्किक सोच, अनुशासित अध्ययन और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को विकसित करता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त षड्ज, ऋषभ, गान्धार आदि स्वर जहाँ लोक संगीत से जुड़ते हैं, वहीं सामवेदीय स्वरों का क्रम (उदाहरणार्थ: ५-४-३-२-१ का आरोह या १-२-३-४-५ का अवरोह) एक प्रकार कीध्वनि-गणितीय संरचनाको उद्घाटित करता है। यह संरचना न केवल संगीत-शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है, बल्कि गणितीय-संगीत के आधुनिक अध्ययन के लिए भी एक आधार प्रदान करती है। सामवेद के स्वरों में जोगूढ़ आध्यात्मिक चेतनाव्याप्त है, वह विद्यार्थियों में आत्म-नियंत्रण, मनःसंयम, तथा एकाग्रता की प्रवृत्ति विकसित करती है। सामगान का अभ्यास केवल एक कलात्मक अभ्यास नहीं बल्कि एकध्यानात्मक साधनाके रूप में किया जाता था, जिससे शिष्य में आंतरिक अनुशासन, आस्थात्मक दृष्टिकोण और समरसता जैसे गुण पनपते हैं।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

सामवेद की गान-विद्या आज केइंटर-डिसिप्लिनरी शिक्षण (बहुविषयी शिक्षण) की उत्कृष्ट मिसाल है। इसमें संगीत, भाषा, गणित, मनोविज्ञान, दर्शन और अध्यात्म – सभी का सम्मिलन है। इसीलिए इसेपूर्ण शिक्षा की दृष्टि से भी देखा जाना चाहिए। यदि आज की शैक्षिक व्यवस्था में सामवेद के गान-तत्त्वों को समाहित किया जाए, तो विद्यार्थियों में न केवल संज्ञानात्मक क्षमता बल्कि भावनात्मक व नैतिक चेतना भी तीव्र हो सकती है। सामवेद के स्वरशास्त्र का शिक्षाशास्त्रीय प्रयोग आधुनिक संगीत, भाषा, और संस्कृत अध्ययन के पाठ्यक्रम मेंसंगीत-संरचना, ध्वनि-विज्ञान, वैदिक साहित्य और योगके साथ एकीकृत किया जा सकता है। इससे वैदिक अध्ययन केवल एक पौराणिक विषय न रहकर आधुनिककौशल आधारित शिक्षाका भी एक अंग बन सकता है। सामवेद की गान-विद्या मात्र धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एकशाश्वत शैक्षिक प्रणालीहै, जिसमें अध्यात्म, अनुशासन, विज्ञान, और कला का समन्वय विद्यमान है। इस प्रणाली का समग्र शैक्षिक विश्लेषण न केवल हमें प्राचीन भारत की ज्ञान-परंपरा से परिचित कराता है, अपितु आज की शिक्षा में नवाचार एवं समग्र दृष्टिकोण के विकास के लिए मार्गदर्शक भी बनता है।

निष्कर्ष

सामवेद की गान-विद्या केवल सुरों, स्वरों और लयों का तात्त्विक अध्ययन भर नहीं है, अपितु यह भारतीय आध्यात्मिक परंपरा की एक ऐसी जीवंत और सारगर्भित अभिव्यक्ति है, जिसमें आत्मा की उन्नति, चित्त की एकाग्रता तथा ब्रह्मानुभूति का माध्यम अंतर्निहित है। सामवेद में प्रयुक्त गान की पद्धति न केवल वैदिक ऋचाओं की भाव-गंभीरता को मुखर करती है, बल्कि यह सुनने वाले के अंतर्मन में दिव्यता, संयम और आध्यात्मिक जागृति का संचार करती है। सामगायकों द्वारा प्रयुक्तक्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्रतथाअतिस्वरजैसे स्वरों ने इस वेद की संगीतमयता को नादयोग की दिशा दी, जिससे यह वेद 'नादब्रह्म' की सिद्धि का साधन बन सका। सामवेद की गान-विद्या में अंतर्निहितध्यान, नाद, मंत्रार्थ और भाव-संप्रेषणकी तकनीक आधुनिक शिक्षा शास्त्र में कई नवाचारों को जन्म देने में सक्षम है। यदि इसकी शैक्षिक संभावनाओं पर दृष्टिपात किया जाए तो यह विद्या छात्र के भावपक्ष, श्रवणकला, मनोयोग, स्मृति, एकाग्रता तथा आत्मानुभूति के विकास में प्रभावी भूमिका निभा सकती है। सामगान का अभ्यास मानसिक शुद्धि, सौंदर्यबोध, ध्वनि-शास्त्र की वैज्ञानिक समझ और योगिक अनुशासन को प्रोत्साहित करता है। यह शिक्षण के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पक्ष को पुष्ट करते हुएनैतिक शिक्षा, मूल्यबोधतथास्व-शिक्षाकी दिशा में नव दृष्टिकोण प्रदान करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि सामवेद की गान-विद्या न केवल भारत की प्राचीन सांगीतिक और आध्यात्मिक परंपरा का जीवंत साक्ष्य है, बल्कि समकालीन शैक्षिक दर्शन और भारतीय ज्ञान परंपरा के विकास के लिए भी एक प्रेरक एवं शोध-संपन्न आधार है। इसकी पुनर्व्याख्या एवं प्रयोग-आधारित शिक्षण पद्धति वर्तमान शिक्षा प्रणाली को एक नई सांस्कृतिक चेतना और आध्यात्मिक आयाम प्रदान कर सकती है।

संदर्भ

1. उपाध्याय, आचार्य बलदेव – वैदिक साहित्य और संस्कृति, शारदा संस्थान, वाराणसी, 2010।
2. कात्यायन वैदिक साहित्य प्रकाशन – सामगान : उद्भव, व्यवहार एवं सिद्धान्त, डॉ. पंकजमाला शर्मा, होशियारपुर, 1996।
3. गीताप्रेस, गोरखपुर – कल्याण वेद कथांक, 1999।
4. डंगवाल, मनीष – नारदीय शिक्षा में संगीत, राज पब्लिकेशंस, दिल्ली, 2005।
5. धर्मावती श्रीवास्तव, डॉ. – प्राचीन भारत में संगीत (वैदिक काल से गुप्त काल तक), भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 2007।
6. पांडेय, ओमप्रकाश – वैदिक साहित्य और संस्कृति का स्वरूप, पुस्तक महल, दिल्ली, 2005।
7. पंकजमाला शर्मा, डॉ. – सामगान में स्तोभ का स्वरूप, संगीत, अंक-7, 2006।
8. परांजपे, डॉ. शरच्चंद्र श्रीधर – भारतीय संगीत का इतिहास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1985।
9. प्रवेश सक्सैना, डॉ. – वेदों में क्या है?, गगन महल, हैदराबाद, 1994।
10. भैरवी संगीत शोध पत्रिका, मिथिलांचल संगीत परिषद, दरभंगा, 2011।
11. सराफ, डॉ. रमा – भारतीय संगीत सरिता, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2003।
12. शर्मा, डॉ. जयचन्द्र – सामगान शब्द का सांगीतिक महत्व, संगीत, जनवरी-जून, 2001।
13. सामवेद (हिन्दी अर्थ व स्पष्टीकरण) – पं. दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मंडल, बलसाड़, 1983
14. सिंह, डॉ. ठाकुर जयदेव – भारतीय संगीत का इतिहास, संगीत रिसर्च अकैडमी, कोलकाता, 1964।
15. हुकम चंद, डॉ. – आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 1998।
16. राज्येश्वर मिश्र, डॉ. – वैदिक परम्परा में सामगान, आनंद प्रकाशन संस्थान, वाराणसी, 1982।